UGC Approved Journal No - 47299
Volume VII Issue 4 December 2017 ISSN 2249-8907

Vaichariki

A Multidisciplinary Refereed International Research Journal

3

Chief Editor:
Dr. Manoj Kumar

ISSN 2249 – 8907

VAICHARIKI

A Multidisciplinary Refereed International Research Journal

Volume VII Issue 4 December 2017

Chief Editor : Dr. Manoj Kumar
Department of Sanskrit
B.R.A. Bihar University
Muzaffarpur

E-mail : vaichariki@gmail.com www.vaicharikibihar.blogspot.com

- **भारत में बुद्धिजीविकृत दलित राजनीति : बदलता विमर्श** 53-57
  जीतेन्द्र कुमार झा, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान, बी.आर.अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **'तिरिद्द' कहानी एक दृष्टि में** 58-59
  डॉ. अजय कुमार शुक्ल, ग्राम मरवट पो-भदावल, जिला बस्ती, उ.प्र.
- **राजपूतकाल में अनुलोम व प्रतिलोम विवाह की अवधारणा** 60-61
  अर्चना त्रिपाठी, शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, कालिकाधाम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेवापुरी, वाराणसी; सम्बद्ध महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- **नालंदा : विरासत से खंडहर तक** 62-64
  रोहित कुमार गुप्ता, शोध-छात्र, प्राचीन संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन : राजनीतिक चेतना का परिणाम** 65-66
  डॉ. प्रेमचन्द्र यादव, एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान विभाग, बी.एन.के.बी. पी.जी. कॉलेज, अकबरपुर, अम्बेडकर नगर।
- **राजपूतकालीन धार्मिक जीवन में नारी की भूमिका** 67-69
  डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, अध्यापक, जनता इण्टर कालेज, सहारनपुर (उ.प्र.)
- **जॉन स्टुअर्ट मिल का विचार पद्धति विश्लेषण का अध्ययन (पुस्तक-सब्जेक्शन ऑफ वूमेन के विशेष संदर्भ में)** 70-73
  संजय शर्मा, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)
- **दलित समाज और राजनीति** 74-79
  प्रियंका कुमारी, शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर
- **मंजीत बावा की कला में रंग प्रयोग** 80-84
  वन्दना तोमर, शोध छात्रा, कला इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **अरण्यानी में छन्दोयोजना** 85-92
  डॉ. देवराज, सहायक आचार्य, संस्कृत-विभाग, अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन केन्द्र, हि. प्र. विश्वविद्यालय, शिमला-5
- **मोदी युग में भारत और पाकिस्तान सम्बन्ध : एक समीक्षा** 93-96
  सन्त कुमार तिवारी, शोध छात्र (राजनीति विज्ञान), डॉ. रा.म.लो. अवध वि.वि., फैजाबाद
- **उच्च शिक्षा के विस्तार हेतु विश्वविद्यालय के रूप में अपग्रेड हो बड़े कालेज** 97-99
  डॉ. राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, पी.जी. कालेज, गाजीपुर(उ.प्र.)
- **नानकचन्द्रोदयमहाकाव्य में अलंकार समीक्षा** 100-111
  डॉ. शंकरनाथ तिवारी, सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (केन्द्रीय) अगरतला
  पौलमी मजुमदार, शोधार्थी, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (केन्द्रीय) अगरतला
- **बिहार : पहचान, विकास एवं चुनौतियाँ** 112-117
  फिरोज आलम, शोधार्थी छात्र-एम.डी., विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।
- **महिलाओं में तम्बाकू सेवन की समस्या एवं समाधान** 118-124
  डॉ. सीमा कुमारी, एम.ए., पी-एच.डी., व्याख्याता गृह विज्ञान विभाग, डॉ. जगन्नाथ मिश्र कॉलेज, मुजफ्फरपुर

जॉन स्टुअर्ट मिल का विचार पद्धति विश्लेषण का अध्ययन (पुस्तक-सब्जेक्शन ऑफ वूमेन के विशेष संदर्भ में)

संजय शर्मा *

विचारजगत में जॉन स्टुअर्ट मिल को उदारवादी, प्रथम व्यक्तिवादी और अन्तिम उपयोगितावादी, बहुलवादी, विकासवादी, समाजवादी के साथ–साथ नारीवादी चिंतक के रूप में जाना जाता है। जॉन मिल ने जीवनपर्यन्त अध्ययन और लेखन कार्य करते हुए विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को अपनी लेखनी की विषय वस्तु बनाया। मिल के चिंतन का प्रतिनिधित्व करने वाली महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं– सिस्टम ऑफ लॉजिक (1843), प्रिंसिपल ऑफ पोलिटिकल इकॉनामी (1848), ऑन लिबर्टी (1859), प्रतिनिधि शासन (1861), उपयोगितावाद (1863) और द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन (1869)। पुस्तक सिस्टम ऑफ लॉजिक में मिल ने पद्धतियों का विश्लेषण किया है एवं 'सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में नारी जीवन में व्याप्त विषमता को उजागर किया है। मिल की यह कृति नारी जीवन के लिए स्थापित पूर्व अतार्किक मान्यताओं का खंडन कर बराबरी की जमीन तलाशती है।

समाजवैज्ञानिकों के लिए पद्धति निर्धारित कर अध्ययन को गति प्रदान करना चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। पद्धति निर्धारण को लेकर राजनीतिक शास्त्रियों में मतैक्य नहीं है। चिंतकों का एक वर्ग सामाजिक अनुसंधान के लिए विशुद्ध वैज्ञानिक पद्धति को अपनाते हुए तथ्यगत अध्ययन की बात करता है। चिंतकों का दूसरा वर्ग विशुद्ध वैज्ञानिक पद्धति को अनुचित करार देते हुए मूल्यों को अध्ययन में शामिल करता है। राजवैज्ञानिकों का एक तबका वह भी है जो तथ्य और मूल्य दोनों को महत्त्व देकर अध्ययन को आगे बढ़ाना चाहता है। समाजविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान के बीच विभाजन का प्रमुख आधार उनके बीच का 'प्रकृति' भेद है और यहीं भेद पद्धति प्रयोग का सीमांकन कर देता है। मिल ने इन विज्ञानों के प्रकृति भेद को भली–भाँति समझकर पद्धति विश्लेषण किया है। उसकी लेखनी कठोर वैज्ञानिक पद्धति का गुरेज करते हुए भौतिक एवं ऐतिहासिक पद्धति का अनुगमन करती है। वह जेरेमी बेंथम और पिता जेम्स मिल से भिन्न दिशा में जाकर आगमन और निगमन दोनों पद्धतियों को अपनाता है। मिल नारी अधीनता के मूल कारणों की खोज करते हुए समाज में प्रचलित अतार्किक नैतिक नियमों (परिभाषित नैसर्गिक गुणों, अंधविश्वासों) का विरोध करता है। इस शोध पत्र में मिल की विचार पद्धति का विश्लेषण करते हुए 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में प्रयुक्त पद्धति का अध्ययन किया गया है। इस ऐतिहासिक शोध की पद्धति भौतिक और ऐतिहासिक है इसमें द्वितीयक स्रोतों को प्रयोग में लाया गया है।

कात्यायनी और सत्यम (2013) का मानना है कि स्टुअर्ट मिल ने परिघटना शास्त्रीय प्रत्यक्षवाद (फेनामेनालॉजिकल पॉजिटिविज्म) के सापेक्षतः अधिक वैज्ञानिक अवस्थिति अपनाकर इंग्लैंड के दार्शनिक हलकों में प्रचलित प्रागनुभववाद (अप्रायॅरिज्म) का खंडन किया। डॉ. ओम नागपाल (2006) कहते हैं कि मिल ने आगमनात्मक पद्धति का प्रतिपादन करते हुए नैतिकता के तार्किक आधार का प्रतिपादन किया है। Vincent Philippe Emmenual Guilline (2005) ने काम्टे और मिल की पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन किया है। Jennifer Ring (1985) ने मिल की पद्धति की वैज्ञानिकता को बताते हुए उसकी सीमाओं को भी बताया है। प्रो. जयनारायन पाण्डेय (1956) का कहना है कि मिल ने व्यक्तिमूलक और अनुभूत्यात्मक तर्कप्रणाली में महत्त्वपूर्ण सुधार किए। राजनारायन गुप्त और राधानाथ मुखर्जी (1954) का कहना है कि मिल ने समाज विज्ञानों में अपनाई जाने वाली पद्धति के बारे में बताया है।

---

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

मिल की पुस्तक System of logic तर्क की व्याख्या से शुरू होती है। वह तर्क को सोचने की एक कला और भाषा को एक माध्यम के रूप में देखता है। भाषा से तर्क में निखार आता है और भाषा के साथ छेड़छाड़ करने से सब कुछ धुँधला हो जाता है। तर्क उचित-अनुचित में अंतर करता है। मिल पद्धति के चार प्रकारों की बात करता है– प्रयोगात्मक (Experimental), ज्यामितिक (Geometrical), भौतिक (Physical) और ऐतिहासिक (Historical)। प्रयोगात्मक पद्धति विशुद्ध वैज्ञानिक है। इसका प्रयोग प्राकृतिक विज्ञान में चरों (वेरिएबल्स) के बीच कार्य-कारण संबंधों को ज्ञात करने के लिए किया जाता है। इसमें किसी प्रक्रिया में जानबूझकर परिवर्तन करते हुए परिवर्तनों के प्रभावों का अवलोकन कर उनको मापा जाता है। .....सामाजिक विज्ञानों में विषय सामग्री पर पूर्ण नियंत्रण संभव नहीं हो पाता है। अतः ज्यादातर अध्ययनों में अनियंत्रित अवलोकन का प्रयोग किया जाता है।[1] मिल प्रयोगात्मक पद्धति को कठोर वैज्ञानिक पद्धति मानते हुए समाज विज्ञानों के लिए अनुपयोगी मानता है। वह कहता है कि पदार्थों में निश्चितता रहती है उनमें किसी तरह का बदलाव नहीं होता है। मानव व्यवहारों में निश्चितता नहीं होती है। पर्यावरण के बदलाव से मानव व्यवहार बदल जाता है। ज्यामितीय पद्धति को मिल निगमनात्मक तरीके से चलने वाली मानता है। जगत निरंतर गतिशील है, किसी पूर्व निर्धारित नियम से इसका अध्ययन संभव नहीं है। डॉ. ओम नागपाल कहते हैं– कि "मिल का मानना है हरेक सामाजिक घटना के पीछे एक नहीं अनेक कारण होते हैं। इनकी जानकारी के लिए भूतकालीन घटनाओं का ज्ञान अपरिहार्य है।"[2] भौतिक पद्धति को मिल आगमन (Inductive) एवं निगमन (Decuctive) का योग मानता है। वह समाज विज्ञान के अध्ययन के लिए इस पद्धति को उचित मानता है। System of Logic में वह कहता है कि समाज का विश्लेषण करने के लिए एक पूर्व दृष्टि जरूरी है। तथ्यों के आलोक में पूर्व ज्ञान के आधार पर समाज के बारे में सही भविष्यवाणी की जा सकती है।

जॉन स्टुअर्ट मिल से पहले तर्क विज्ञान की मुख्य पद्धति निगमनात्मक थी जिसका प्रतिपादन अरस्तू ने किया था। इस पद्धति में हम किसी ज्ञात सिद्धान्त को किन्हीं उदाहरणों पर लागू करते हैं। इसमें खोज की प्रक्रिया सामान्य से विशिष्ट की ओर चलती है। जैसे– 'मानव मरणशील है', अतः राम, श्याम, रहीम, रवि, कृष्ण– सभी मरेंगे। निगमन प्रत्यक्ष और विपरीत दो तरीके का होता है। प्रत्यक्ष निगमन विधि से दृष्टान्त व परीक्षण से ज्ञात नियमों की सत्यता को प्रमाणित किया जाता है। इस प्रकार का निगमन प्राकृतिक विज्ञानों में अपनाया जाता है। विपरीत निगमन विधि से परीक्षणात्मक साधरणीकरण को ज्ञात किया जाता है फिर उसी के आधार पर दृष्टान्तों का परीक्षण किया जाता है। यह सामाजिक विज्ञानों के लिए उचित होता है।[3] मिल निगमन पद्धति को अधूरी मानता है। वह सत्य तक पहुँचने के लिए आगमनात्मक पद्धति को जरूरी मानता है। वह अनुभव को सबसे बड़ा शिक्षक मानता है। हमने देखा राम, श्याम रहीम, रवि, कृष्ण.....सभी मरें है, इसीलिए हम इस निष्कर्ष तक पहुँचे कि सभी मानव मरणशील है। यह विशिष्ट से सामान्य की ओर पहुँचने का पथ है। मिल मानता है कि निगमन भी मूलतः आगमन पर निर्भर है। इसमें जो प्रिपोजीशंस बनाई जाती है वह अनुभवजन्य होती है। इस तर्क को रखना कि सभी व्यक्ति मरणशील इसलिए तुम भी मर जाओगे। इसका भी आधार अनुभव है। डॉ. ओम नागपाल कहते है कि– 'ए.एन.व्हाइटेड ने अपनी किताब प्रोसीडिंग्स ऑफ द अरिस्टॉटलियन सोसाइटी' में ठीक ही लिखा था कि 'प्रतिज्ञप्ति के रूप पर विचार करते हुए और समझते हुए कि' इन रूपों के कारण निगमन घटित होता है, अरस्तू ने इस तर्क विज्ञान की स्थापना की। डॉ. ओम नागपाल आगे कहते है– 'अरस्तू ने जिस विज्ञान की स्थापना की, वर्षों तक उसे ही वंदनीय समझा गया, परन्तु मिल ने उस आधे–अधूरे तर्क विज्ञान में आगमनात्मक पद्धति जोड़कर पूर्णता प्रदान की है।[4] System of logic में पद्धति विश्लेषण करते हुए मिल स्वीकार करता है कि राजनीति विज्ञान में सामान्य सिद्धान्तों का निर्माण हो सकता है, पूर्व निर्धारित सिद्धान्तों से प्रासंगिक अध्ययन नहीं हो सकता। डॉ. इकबाल नारायणन कहते है कि– 'मिल ने उक्त सीमाओं का ध्यान रख राजनीति विज्ञान में इसके प्रयोग की बात की है।'[6] मिल समाजविज्ञान में प्रयोग होने वाली पद्धतियों को प्रतिष्ठा दिलाना चाहता है। सेबाइन इस बात को स्वीकार करते हुए कहते है– 'सामान्य रूप से वह सामाजिक

विज्ञानों में आगमन और निगमन दोनों पद्धतियों का प्रयोग करना चाहता है। वह कहता है कि एक ओर राजनीति व्यवहार के मनोवैज्ञानिक नियमों का पालन करती है तो दूसरी ओर राजनीतिक घटनाओं की व्याख्या अधिकांशतः निगमनात्मक होती है। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सामाजिक विषयों के ज्ञान के लिए दोनों पद्धतियाँ आवश्यक है। इन्हें एक दूसरे का सहयोगी होना चाहिए।[6] प्रो. जय नारायण पाण्डेय कहते है कि मिल ने तर्क प्रणाली में सुधार किया। वह उपयोगितावादी तर्क प्रणाली का निर्माता है।[7] Auguste Comte and John Stuart Mill an Sexual Equality : Historical, Methodological and Philosophical Issues में Guillin ने काम्टे और मिल के पद्धति में बताते हुए उसकी पद्धति की वैज्ञानिकता के बारे में बताते है। मिल ने अपनी रचनाओं में भौतिक और ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग करता है। वह अनुभूति और पर्यवेक्षण पर बल देता है।

मिल का कहना है कि समाज में प्रचलन में जो नैतिक नियम विद्यमान है उसके पीछे तार्किक आधार होना चाहिए। वह इस बात को स्वीकार करता है कि समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का कोई तार्किक आधार नहीं होता। वर्तमान समय में समाज व्यवस्था से जुड़े बहुत सारे नियम कानून ऐसे है जिनका कोई नैतिक तार्किक आधार नहीं है। यह अंधविश्वासों को बढ़ा रहे हैं। वह मानता है कि नैतिक नियम भी वहीं है जो मनुष्य और मानवता को सुख प्रदान करे। वह खुशी से आगे जाकर खुशहाली की बात करता है।

सब्जेक्शन ऑफ वूमेन में मिल ने नारी को दोयम दर्जा प्रदान करने वाली संस्थाओं एवं विचारों का विरोध कर उन्हें अनैतिक और अतार्किक करार दिया है। वह मानता है कि नारी जीवन को निर्देशित करने वाले नियम पूर्वाग्रहों से मुक्त है। मिल सब्जेक्शन ऑफ वूमेन के प्रथम अध्याय में कहता है कि एक की दूसरे पर कानूनी पराधीनता स्वतः में गलत है।[8] व्यक्ति के लिए प्राथमिक है– 'आज्ञादो और भेदभाव का न होना।' जो लोग यह स्वीकारते है कि पुरुषों को आदेश देने का हक है और महिला का काम आज्ञापालन है। यह बताने के लिए ऐसे लोगों को एक नैतिक तर्क देना पड़ेगा या अपनी सोच को तिलांजलि देनी होगी।[9] मिल कहता है कि– 19वीं सदीं में पूर्वाग्रहों को काफी बल मिला। इस सदी ने 18वीं सदी के विरुद्ध मानव स्वभाव के असंगत तत्वों को पाला। यही कार्य 18वीं सदीं ने भी किया था। वह कहता है कि मौजूदा व्यवस्था जो स्त्री को पूर्णतः पुरुष के अधीन मानती है। इसको नैसर्गिक गुण मानती है। यह मात्र कोरे अतार्किक विचारों पर अवस्थित है क्योंकि किसी अन्य व्यवस्था को परखा नहीं गया।[10] मिल का मत है कि असमानता की व्यवस्था का पालन कराने के पीछे मानव कल्याण की सोच नहीं थी। राजव्यवस्था के नियम कानून हमेशा उन संबंधों को मान्यता देकर आरंभ होते है जो व्यक्तियों के बीच पहले से विद्यमान होते है। इस तथ्य से ऐसी व्यवस्था ने जन्म लिया कि मानव समाज के उदय से ही, स्त्री के साथ पुरुषों द्वारा कुछ मूल्य जोड़ दिए जाने के कारण वह अधीन रहीं।[11] मिल सब्जेक्शन ऑफ वूमेन में पुरुष के 'अधिपत्य के गुण' की आलोचना करता है। मिल स्त्रियों के लिए न्यायोचित समानता की बात करता है। वह सभी कार्यों एवं व्यवसायों में उनकी भागीदारी चाहता है। वह महिलाओं की क्षमता को कमतर नहीं आँकता है। वह पुरुष–स्त्री के बीच अंतर की वजह शिक्षा को मानता है। वह कहता है इतिहास में ऐसी बहुत सी रानियाँ हुई जिन्होंने कठिन समय में राजपद संभाला। रानियों के गुण पुरुष सत्तात्मक समाज द्वारा दर्शाए गुण से भिन्न थे।[12]

मिल की पुस्तक सब्जेक्शन ऑफ वूमेन की पद्धति भौतिक (आगमन, निगमन) और ऐतिहासिक है। मिल नैतिक नियमों का तार्किक आधार ढूढ़ता है। नारी जीवन को प्रभावित करने वाले अतार्किक नैतिक नियमों को खारिज करता है। वह पुरुष समाज द्वारा महिलाओं पर लादे गए पूर्वाग्रहों अंधविश्वासों का विरोध करता है। वह न्याय की नैतिकता स्थापित करने की बात करता है। वह 'समता आधारित स्त्री–पुरुष संबंध' चाहता है। वह एक ऐसी व्यवस्था का पक्षपोषक है जिसमें एक को स्त्री होने के नाते अपने हितों को बलिदान देना न पड़े और दूसरे का पुरुष होने की वजह से विशेषाधिकार न मिले। मिल की पद्धति में वैज्ञानिकता है, कठोरता नहीं। वह वास्तव में उपयोगितावादी तर्क विज्ञान का निर्माता है।

सन्दर्भ :

1. हरिकृष्ण रावत, उच्चत्तर समाजशास्त्र विश्वकोष (जयपुर, रावत पब्लिकेशन : 2011), पृ. 164.
2. (डॉ.) ओम नागपाल, जॉन स्टुअर्ट मिल : व्यक्ति स्वातन्त्रय का पुजारी (दिल्ली, हिन्द पाकेट बुक : 1990), पृ. 88.
3. हरिकृष्ण रावत, उच्चत्तर समाजशास्त्र विश्वकोष (जयपुर, रावत पब्लिकेशन : 2011), पृ. 106.
4. (डॉ.) ओम नागपाल, जॉन स्टुअर्ट मिल : व्यक्ति स्वातन्त्रय का पुजारी (दिल्ली, हिन्द पाकेट बुक : 1990), पृ. 86.
5. (डॉ.) इकबाल नारायन, प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक (जयपुर, ग्रन्थ विकास : 2005), पृ. 317.
6. विश्वप्रकाश गुप्त (अनु.), 'राजनीति–दर्शन का इतिहास' (नई दिल्ली : एस. चन्द एंड कंपनी लि., 1977), पृ. 375–76.
7. जयनारायन पाण्डेय, प्रमुख राजनीतिक विचारकों की चिंतनधारा (जबलपुर (म.प्र.), लोक चेतना : 1956) पृ. 199.
8. प्रगति सक्सेना (अनु.), 'स्त्रियों की पराधीनता' (नई दिल्ली : राजकमल विश्व क्लासिक, 2002), पृ. 33.
9. वही, पृ. 34.
10. वही, पृ. 36.
11. वही, पृ. 37.
12. वही, पृ. 84–87.

***